निरपेक्षता और एकता पर जोर दिया गया है। दूसरे महत्वपूर्ण प्रकाशन इस प्रकार हैं :— 'इन द फेस आफ़ एग्रेशन.' 'इन्डियन मुसलिम्स स्पीक', 'दी हारवेस्ट आफ़ ग्लोरी'। प्रकाशन विभाग की पत्रिकाओं में भी इस विषय पर उपयुक्त सामग्री रहती है। देशभक्ति के गीतों और कविताओं के संग्रह भी हिन्दी और उर्दू में छापने का प्रस्ताव है। राज्य सरकारों को भी अपनी अपनी भाषाओं में इसी प्रकार की पुस्तकें छापने की सलाह दी गयी है।

**क्षेत्र प्रचार निदेशालय**

सदा ही निदेशालय का राष्ट्रीय एकता मुख्य विषय रहा है। किन्तु संकटकाल के दौरान, सभी क्षेत्र प्रचार के सभी कार्यों में इस पर विशेष जोर दिया गया। सभी क्षेत्र प्रचार टुकड़ियों ने प्रधान मंत्री के भाषणों का पूरा पूरा उपयोग किया। लड़ाई-बन्दी के बाद ही सीमावर्ती इलाकों में वहां के लोगों का देश के अन्य लोगों से सम्बन्ध बढ़ाने के लिये विशेष आन्दोलन चलाया गया। इसमें राष्ट्रीय एकता के आर्थिक पहलू पर भी जोर दिया गया।

**पत्र सूचना कार्यालय**

समाज के सभी वर्गों के लोगों ने देश रक्षा में जो योग दिया, उसका प्रचार किया गया। खास कर अल्पसंख्यक समाज के लोगों के वीरता के कारनामों पर विशेष प्रकाश डाला गया। पाकिस्तान ने अल्पसंख्यकों को गुमराह करने के लिए जो प्रचार किया, उसका प्रभावशाली जवाब दिया गया। पाकिस्तान के हमले की निन्दा में मुसलमान नेताओं ने जो बयान दिये उन्हें प्रचारित किया गया। प्रचार के ये अभियान जारी हैं, जिसमें इस पर जोर दिया जा रहा है कि शत्रु का मुकाबला करने के लिए ही नहीं, बल्कि देश को निर्भरता बनाने का प्रयत्न सफल करने के लिए भी एकता अत्यन्त आवश्यक है।

**संगीत और नाटक विभाग**

चीनी आक्रमण के सन्दर्भ में विभाग ने "कोहेनूर का लुटेरा" नामक एक नाटक तैयार किया है, जो अब तक 110 बार खेला जा चुका है। विभाग ने अभी हाल में "हम तुम और वो" शीर्षक एक कार्यक्रम शुरू किया है, जिसमें राष्ट्रीय एकता पर बहुत अधिक जोर दिया गया है। अब तक इसे 80 बार से अधिक प्रस्तुत किया जा चुका है।

**फिल्म विभाग**

फ़िल्म विभाग द्वारा वृत चित्रों या डाकुमेन्टरियों में मेलजोल और राष्ट्रीय एकता पर जोर देने के अलावा साप्ताहिक समाचार चित्रों में ऐसी घटनाओं और दृश्यों को शामिल किया है, जो इन बातों से सम्बन्धित हों। इस सिलसिले में दो फ़िल्में बनाई गई है—

(1) उपराष्ट्रपति का सन्देश

(2) एकता—समय की मांग

पहली 24-9-65 को दिखाई गई और दूसरी जल्दी ही दिखाई जाने वाली है।

**Indian Embassies and Diplomats**

591. **Shri Krishnapal Singh:**
**Shri M. L. Dwivedi**
**Shri Subodh Hansda:**
**Shri S. C. Samanta:**
**Shri Parashar:**
**Shri S. N. Chaturvedi:**
**Shri Brij Raj Singh:**

Will the Minister of **External Affairs** be pleased to state:

(a) whether it is a fact that in spite of a large number of Embassies and Diplomats employed by our Government, India's case has not always been presented to the world in the proper manner;

(b) what arrangements exist in the Ministry for the guidance of the staff

of Embassies and for the supervision of their work; and

(c) whether any action is ever taken against a member of the Foreign Service whose work is not found satisfactory, if so, the nature of action taken?

**The Minister of External Affairs (Shri Swaran Singh):** (a) No, Sir. All our Missions abroad present India's views on all important topics relating to bilateral relations and international affairs with vigour and clarity. Our diplomats have functioned effectively with patience, perseverance and tact, with a degree of success which does not necessarily make newspaper headlines, and which, for obvious reasons, cannot all be publicised. Indeed, it can be fairly stated that despite very limited staff for many tasks imposed on them abroad, our Missions have functioned well on the basis of instructions given to them from time to time from Delhi.

(b) There are territorial Divisions in the Ministry of External Affairs which analyse carefully all despatches and special reports from Indian Missions abroad whereafter in accordance with the principles of our foreign policy decisions are taken and instructions issued.

(c) Annually assessment is made of every individual's performance including that of the Heads of Missions. Weaknesses and deficiences are pointed out to the individual concerned in writing, and further action is taken against anyone found deficient in accordance with prescribed rules.

**Maintenance of Families of Armed Forces**

**592. Shri Hari Vishnu Kamath:**
**Shri Warior:**
**Shri Daji:**
**Shri Jagdev Singh Siddhanti:**

Will the Minister of **Defence** be pleased to refer to the reply given to Short Notice Question No. 10 on the 23rd September, 1965 and to supplementaries thereon and state:

(a) whether the question of granting of educational scholarships, freeships and other concessions to the children, of allotting land to other dependents of officers and men killed or permanently disabled in action has been further considered;

(b) if so, with what results;

(c) whether the question of raising the salaries of other ranks (Jawans) has been examined; and

(d) if so, the outcome thereof?

**The Minister of Defence (Shri Y. B. Chavan):** (a) and (b). Yes, Sir. Various educational concessions have already been sanctioned by the Central and State Governments for children of service personnel killed or disabled in action, but at present a comprehensive scheme is being worked out by the Ministry of Education in the matter. A scheme for the rehabilitation of disabled soldiers and the families of Jawans killed in action by grant of agricultural land in Rajasthan is under consideration in consultation with the Government of Rajasthan.

(c) and (d). This question is under examination.

**हिन्दी में टेलीफोन डायरेक्टरी**

**593. श्री प० ला० बाकपाल :** क्या संचार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और बिहार के हिन्दी भाषी राज्यों ने संचार मंत्रालय तथा इन राज्यों के प्रादेशिक डाक तथा तार विभागों के अधिकारियों को अभ्यावेदन देकर प्रार्थना की है कि वे टेलीफोन डायरेक्टरी हिन्दी में प्रकाशित करायें ; और

(ख) यदि हां, तो यह कब प्रकाशित हो जायेगी ?